

ASHA ARCHIVES

3101 1396

1396

ASHA ARCHIVES

संपुत्रसर्वजगतमनोरथमदं सवेनरानातिनापित्वा सर्वविकल्पमोहकरनंगा किनी हेरुकाजि यः वज्रं वरिवर्जितो युरगो शनो ह्यमो यः पदं सत्त्वान्त्य
कृपातुररुस्यमनसतेत्यं पुस्तं सवेता ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमः श्रीवक्त्रसवनाय नमः ॥ धर्ममाप्तिरुत्तम ॥

ॐ नमः श्रीचक्रसम्बन्धाय ॥ ३ ॥ ज्ञायामि पूजार्हं कल्याणाय जगन्मानं
 किम्बदन्तं नित्यं काय ॥ वाक्कायं गुणविह्वलं नमस्कृत्य कञ्चिन्मन्त्रं शुद्धं
 मन्त्रं रावक ॥ अधूनायुक्तं पूजार्थं नरस्य मण्डलं वक्रं चक्रे यित्वा
 वक्रं यित्वा गुणविह्वलं समाहितं ॥ गुणमण्डलं दत्तं धूलिधूतं तामण्डलं वि
 भक्तं नयाय ॥ सिद्धं तस्यैव पापं पूजायायैव लिप्यं च भलिपूजायाव

५२

नास्तीति यधूतयस्वधनयाय मन्त्रं हका नरनरं वीजं ॐ श्रीगुरुं श्रीस्व
 धूगुर्मन्त्रं वीजं तस्यैव मण्डलं धिस्त्यं कथं धं पूजायाय धर्मा अकालमस्वदक
 ताकिन्तय धं लिप्यं अयातयति पादपूजायाय ॥ धं लिप्यं निरुयं द
 धूमं कालं कृगवायसलि मण्डलं दक्ष्याय पूष्यन्यासयाय धूतं अयं पूजा
 याय मूलं गुमन्त्रं जपयाय दत्तं धिप्यं दकाधियकं भाहनिरुसासदक्षाय

थनपयपानपूजाया गताकलयय आदिकाय ॥ थंलिर्मंदलथिल कि
म्वउतने गताकवर्मंदल विमर्जन गलेसपूजा क्यलखवलिक
यथंलि जजमान कि (मद अनिया काकाया उ समाधियाय ॥ ॥
जानम ४थी वकुसममाय ॥ ३ ॥ उं न्ना ४ हं श्रीमरुवजसत्व गुर्वव
चनकमलायसम्यक्लाना रावसन कनायनमहं ॥ वर्यरवा दिसमम
न सक्तावलय तिसर्य सकुगुयत्यसादन ममायूहान र्यरव ४ श्रीम

मवज उकाय गकिनी वकुवर्णिन पयवहान शिकानाय जानायज
गानाम ४ ॥ यं वरुन शिकानायज गानाम ४ ॥ यावता वज गकिन्यकि
नर्म कल्यवधना ॥ लाका कृणुवत्यन्यसुव शिखानम ४ सदा ॥ मगिया
कायन गून्यता रावथन ॥ श्रीकायन सवयहान हकावह उगून्यता ॥ नृका
नामदयहान नपगतय हं ककायन कविष्ठिर्ता ॥ उं सर्वसत्व धन लहगाय
कवर्णुदिरु जर्मवनमा लान रावथन ॥ गदनूकव (मधनद किलहकम

का नलसूर्यमधुलं॥ वामहस्तमूका नवयुग्ममधुलं॥ उँ ह १ नमः १ श्री स्वाहा हं
वाघदूह हं हं हा रु २ हं॥ उँ वं हां यों की माँ कूँ की हं हं रु २ स्वाहा॥ उँ हं
स्वाहा॥ वज्र॥ उँ हां खो हा॥ घं था॥ कमलावलनघं था वा दे य नू॥ गं खा
धि स्थनयाय॥ उँ ग्रीवज्ज हं हं रु रु अकिनी जालसर्वनं स्वाहा॥ उँ
खलु बाहं हं हं रु॥ उँ खलु बाहं सर्वविघ्नानृच्छदय हं॥ स्वस्वमेकं लपूष्याधि
मान॥ उँ सप्रतिष्ठितवज्रं स्वाहा॥ उँ मू १ हं॥ मधुलाभिधानं॥ मरु (धौ ध

न॥ उँ ह १ हा १ की १ अर्ख स्वाहा॥ पून १ पीत्वा गूँ न्यतां रावय नू॥ की १ का नलप
मरां जनं मां का ननमा मकि कूँ द्विगुर्जीवजं वज्रहस्तं हं का नल कायक
कूँ द्विगुर्जीवज २ रुक्ता तथा संपूतया (गलमहा ना गलद्रवी रतां पय नू॥
पून ह १ हा १ की १ अर्ख स्वाहा॥ उँ सर्वरुक् कामिनी सर्वरुक् (भा धनिगुक्कव
जिनि का (ध धनी सर्वद्रव्यायापिनी (भा धय २ हं॥ उँ अमृतं अमृतं प्रवमय
हं स्वाहा॥ उँ वज्रहं म हं॥ उँ पूं जाँ उँ मूँ गं लाँ दं माँ जाँ उँ शिं काँ काँ लं काँ हिं

तत्सर्वं हंकात्रयविष्णुमनः सगवर्तं कुरुवर्धुं षड्गुणं ॥ पथमसुजायां व
 शवज्जघ्नाधनं द्वितीयायां उमसूखं तृतीयायां नीपागं ॥ तृतीयायां उम
 नृपतीं ग ॥ चतुर्थं सर्वं कुरु गंधर्वा मंत्रकपीतं ॥ काका गंधर्वा कुरु ॥ उलका गंध
 र्वा ग ॥ गंधर्वा गंधर्वा वका ॥ गुरुकला गंधर्वा पीता ॥ यमदोरी कुरु पी ॥ यमदु
 गी पीतवका ॥ यमदुष्टी वका गंधर्वा ग ॥ यममथनी गंधर्वा मकुरु ॥ तृतीया ॥ उ
 मकनी मकुरु हंकात्र ॥ पूर्व ॥ उं गुरु २ हं २ रुद्र ॥ दक्षि ॥ उं गुरु ज्ञायय २

हं हं रुद्र ॥ यथि ॥ उं आ नय हं सगवन् विद्या वाज हं हं रुद्र ॥ उल ॥ तत्स
 र्वाका गंधर्वा नृपविष्णुमनः सगवन् विष्णुवर्जं हंकात्र ॥ विष्णुवर्जं हंकात्र ॥
 धिक्कितं तदसिनायवरुले प्रमार्ज्य वक्रकनिका नृपे नृपे गते वज्रमयी रु
 मी विशाखा ॥ उं मदनी वजीरु वजीरु वध्वं हं हं रुद्र ॥ उं वज्र प्राकात्र हं हं ॥
 उं वज्रपंजल हं पं हं ॥ उं वज्रवीतान हं हं ॥ उं वज्रगवजाल गंधर्वा मी ॥ उं
 वज्रकालान नाका हं ॥ हंकात्र उं हं हं दिगप्राकात्र वरिष्णु निवर्गिता ॥ ॐ

दू॥ म ध्वा॥ ओं जा कि नी य हूं हूं रुद्र॥ पूर्व॥ ओं ला म हूं हूं रुद्र॥ दक्षि॥ ओं ख ए
वा हूं हूं रुद्र॥ पश्चि॥ ओं वृ पि नी य हूं हूं रुद्र॥ उरु॥ ओं का का ग्य हूं हूं रुद्र॥
ओं उल का ग्य हूं हूं रुद्र॥ ओं म ना ग्य हूं हूं रुद्र॥ ओं मू क ला ग्य हूं हूं रुद्र॥ ओं य म दा
दी य हूं हूं रुद्र॥ ओं य म इ नी य हूं हूं रुद्र॥ ओं य म ड डी य हूं हूं रुद्र॥ ओं य म म थ
नी य हूं हूं रुद्र॥ ओं वृ णा य हा मा य हूं हूं रुद्र॥ ओं ग क ना य हूं हूं रुद्र॥ ओं का ली क
ला य हूं हूं रुद्र॥ ओं क ल की रं व वा य हूं हूं रुद्र॥ ओं अ दू ट हा सा य हूं हूं रुद्र॥ ओं ल

श्री व न रु ता म ना य हूं हूं रुद्र॥ ओं धा ली ध का मा य हूं हूं रुद्र॥ ओं कि लि कि ला ल वा
य हूं हूं रुद्र॥ पंथा प हा न पू जा॥ वा उ म ला ग्य॥ ओं व ज वि ण हूं॥ ओं व ज र्वा
ण॥ ओं व ज मू द डी॥ ओं व ज मू नू ज मू॥ ओं व ज ला ग्य हूं॥ ओं व ज मा ल गों॥ ओं
व ज गी रं डी॥ ओं व ज नू य मू॥ ओं व ज पू य हूं॥ ओं व ज धू ण गों॥ ओं व ज व ला
कि रं डी॥ ओं ग न्ध व ज मू॥ ओं व ज द र्म न हूं॥ ओं व ग व ज गों॥ ओं य ग व ज डी॥
ओं ध र्म धा उ ग हूं॥ धं ० था य॥ मृ ति॥ ॥ सर्व हूं हूं रुद्र॥ न र्म दा हूं हूं रुद्र॥ ग द थ

ASHA ARCHIVES

1.396

ASHA ARCHIVES

गन्धेष्टार्थं नमस्ते नमः नमः नमः

ॐ

पुनः दक विनामलि विव रुतं श्रीसंवर्न न माशुतं ॥ व्याफ विष्व महाहानं सचा
 त्मलि सदा स्थित ॥ कृपा कारु महा मोद श्रीसंवर्न न माशुतं ॥ ॥ मरुत पालयोः
 य ॥ उं न माशुत गवत वी न वी न स्व नाय हं २ रुद्र ॥ उं महा कल्या निर्य निराय हं २ रुद्र
 उं ज गोम वृतात्क टा य हं २ रुद्र ॥ उं दृष्टा कला बा ग्र सी मत मूखा य हं २ रुद्र ॥ उं
 सहस्र रुद्र ज रा ख ना य हं २ रुद्र ॥ उं य न भू पा ग अ गि नू न ख द्वा ग धा नि (ल हं रुद्र ॥
 उं महा धू ॥ उं व्या पु चै जि नी व व धा नि (ल हं रुद्र ॥ उं महा धू मा ध का व व पू मा य

हं २ रुद्र स्वाहा ॥ ॥ पाप द ग ना कृ त का नि गानू मा दि त म ध म षि ल नी हि
 त दा षा नां पु ति द ग या मि पु न त ४ पू न क रं स च रं वि न (ध ग व क ४ ख ह जि ना रु
 म जि म जि न स त र्म रु ता नि ४ क ग ना नि अ नू मा दि ता नि वा (ध र्म म्य क नि ल म या
 म ख ४ जि न त्वा दि रु यं स र्व रा ग न र्ग या नि रि ४ स र्व रा व ल वा (धो वि लं वि न (ध २
 नू रु न मा ग क थ म्य व ॥ ॥ ००० द्या दि या ग ४ ॥ ॥ त द नू मे गी क नू ल मृ दि ता य
 का मि त् व रु व म् वि हा री रा व य नू ॥ ख रा व गु द्वा ४ स र्व ध र्मा ४ ख रा व गु द्वा ३ हं ॥ गृ

न्य ता ह्वावजस्रशावात्मकाः ॥ विरुमातमुवेतिष्ठन् बाधिसंरावपुनक्षतः ॥
ततापलिधनवसातू ॥ गून्पतातापतिवृद्धः ॥ ॥ अरिषकनागंखलंखलं
लहाय ॥ उंयथाहिजातमागलत्तापिताश्वतथागततथाहंसापयिष्यामि
गुर्वदुदिवानवादिनाउं ॥ ४ सर्वतथागतक अरिषकसंगीयहं ॥ अरिषकम
हावजं गेधादुकंनमस्तु गेयम् ॥ कं पूजनाथमैकं टपयक नाह्वं ॥ उं सर्ववृद्ध
वृजामलिमहा मकटा विषहं ॥ मकटं पूय ॥ उं वज्रधातुं ग्वनी अरिषिचहं ॥

उं सत्ववर्जि अरिषिचहं ॥ उं नत्ववर्जि अरिषिचहं ॥ उं धर्मवर्जि अरिषि
चहं ॥ उं कर्मवर्जि अरिषिचहं ॥ ४ ॥ उं अंशोदिरिषिकस्त्वमसिबुद्धवज्र
रिषक ॥ ४ ॥ उं दं न स सर्ववृद्धं गृह्ण वज्रसिद्धय ॥ वज्रकाय ॥ उं वज्राधि
पतित्वामरिषिवाति तिष्ठ वज्रसमयस्त्व ॥ घृष्टकाय ॥ उं वज्रसत्त्वामरिषि
वामिवज्रनामा रिषकट ॥ हृष्टी हृष्टक नामगथागतहृष्टवृद्ध ॥ नाम
॥ ॥ पूर्वदाकर्षणपायादि ॥ पूर्वान्याग ॥ पलायं मुनि ॥ ॥ धनजय

तद्वनिता अग्निपविलीनं ॥ वीजा क्रमादिकं अरि न वरानुवर्षे प्रवर्षे
दृष्ट्वा गदय विविक्तस्य न निरंकुत्वा अलि कालि पलिन गत्य ४३ अ ४६ का
नस्य ४ अ न कस्य न उत्रि लि गत्य अक द वरा स्य लि ता उ ग द र्थ कत्वा स
कला मृत न समानीय वरु दिगं प्रवीरु य यथा यर्थ न प्रवी जं प्र निष्ठा राव
नीया ॥ उं का ना दि कु म पि कु म ॥ विली नं म व ला क् ॥ उं अ ४६ ॥ वलि अ धि
ष्ठा ॥ पूर्व वदा कर्षे ल पा या दि पू र्ण न्या ग र्प वा प हा न पू जा वा उ ला ग्म र्घ ॥

रुद्रस्वाहा॥ ॥ पूजा लाघ्यं धर्मं कृति ॥ नमो ॥ धनं धनं कालि किं गतं
क॥ ॥ धनं लिं सगं (धो) सगं धर्मं पूजा रावनास्वी गय धूमं गय धनं ध
धिं (धो) धनं गय धर्मं धुधिय सिद्धं ऊरु स्नानं नेवय सगं विमं य धर्मं
अकालमूकय दक्ष क्षिति गय कृति गय निवनील जिन लारु अकाल
सगं सगं निरुक्ता दं त्वी न दं या व अकाल रावताम किं ॥ ॥ धर्मं लि दव
पूजा रावनास्वी तस्य पूजा धूमं निमकुना गनानया क धमं धुधिल सिद्ध

ऊरु स्नानं नेवय धाल सगं गय सगं धर्मं अकालमूकय दक्ष क्षिति ॥
धनं लि वाकजा मधुल धिल किं गतं गतं क रुका उरु वान गता क्र क्रम
यन अग्नि वाद विद्य मधुल विमं ऊरु नया क सगं गय माह निष्ठा सिद्ध
ली गिय धलि गता कल क ध वान य व गालि का काय ॥ ज्ञायां पा जं म ध
ठा पूर्व ॥ चला ला द किं ॥ धरु पश्चिं ॥ क कला उरु न ॥ धर्मं लि वा हिल हि क
सगं गय काय ॥ विमं ऊरु नया य पं ला धं कृति नयं ॥ गता कल वान विमं

नयाय ॥ मनु लखी जज मा या न विय ॥ लिद कां अ निया क व लि का य ॥
गल व क सा ज न या य खान का का य खान का मुख म द्वा क या य अ
निर्वा द विय धू ति रु ल गुरु ॥ ॥ ॐ ॥ गुरु ॥

